

पद ३२४

(राग: खमाज - ताल: धुमाळी)

भजन बिना तू सुन नर मूरख । मुर्दा काहेकु सिंगारा रे ॥ध्रु.॥ जो
प्रभुने तोहे इतना दीनो । सो प्रभु दीनो बिचार रे ॥१॥ आया था
तब क्या ले आया । जाना अबहि उधारा रे ॥२॥ मानिक के मन
सुन नर मूरख । अबहुन चेत गँवारा रे ॥३॥